अगर इंसान में कुछ करने की इच्छा हो तो कुछ भी असंभव नहीं।
– अज्ञात

अलग–अलग हिस्सों में वर्चुअल रैलियां

ठोस रूप से कहें तो शीर्ष पार्टी नेताओं का केंद्रीय पार्टी कार्यालय से किसी खास राज्य के गांव–मोहल्लों में मौजूद अपने कार्यकर्ताओं और समर्थकों को पोलिंग बूथ के स्तर पर लाइव संबोधित करना।

लक्ष्मी।

कोरोना से लड़ाई के बीच ही सत्तारूढ़ दल बीजेपी ने देश के अलग–अलग हिस्सों में वर्चुअल रैलियां करनी शुरू कर दी है। ठोस रूप से कहें तो शीर्ष पार्टी नेताओं का केंद्रीय पार्टी कार्यालय से किसी खास राज्य के गांव–मोहल्लों में मौजूद अपने कार्यकर्ताओं और समर्थकों को पोलिंग बूथ के स्तर पर लाइव संबोधित करना। पिछले तीन दिनों में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में ऐसे आयोजन संपन्न किए हैं।

बीजेपी कह रही है कि ये चुनावी रैलियां नहीं हैं, लेकिन जिन तीन राज्यों में ये हुईं उनमें से दो में जल्द ही विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। बिहार में इसी साल और पश्चिम बंगाल में अगले साल। ऐसे में इस कवायद को चुनावों से पूरी तरह काटकर तो नहीं देखा जा सकता। विरोधी दलों की प्रतिक्रिया भी इसकी पुष्टि करती है। बिहार में आरजेडी समर्थकों ने थालियां बजाते हुए वहां 72 हजार एलईडी टीवी सेट्स के साथ आयोजित अमित शाह की वर्चुअल रैली का सांकेतिक विरोध किया। समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव ने इसे डेढ़ सौ करोड़ के खर्चे वाली रैली बताते हुए कहा कि बीजेपी विपक्ष का मनोबल तोड़ने के लिए ऐसी महंगी रैलियां आयोजित करवा रही है। डेढ़ सौ करोड़ के आरोप पर तो कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन ये रैलियां खर्चीली जरूर हैं।

प्रति पोलिंग बूथ एक एलईडी टीवी का इंतजाम करना और तकनीकी सुविधाओं का इस्तेमाल करते हुए प्रदेश भर के कार्यकर्ताओं तक अपनी बात पहुंचाना देश की कितनी पार्टियों के लिए संभव है, कहा नहीं जा सकता। हालांकि एक सवाल यह भी है कि बीजेपी के अलावा देश की कितनी पार्टियां निर्धारित तिथि पर किसी राज्य के हर बूथ पर कोई राजनीतिक कार्यक्रम करने में सक्षम हैं। निश्चित रूप से अमित शाह की देखरेख में बीजेपी ने अपनी चुनावी मशीनरी और संगठनात्मक तंत्र को बहुत ज्यादा चुस्त बना लिया है, जिसका फायदा उसको अधिकतर चुनावों में मिल रहा है।

बावजूद इसके, हकीकत का दूसरा पहलू यह है कि कोरोना का यह दौर बाकी पार्टियों को उतना भी सक्रिय नहीं होने दे रहा, जितने की उनमें क्षमता है। व्यापक जनसंपर्क में जाना उनके कार्यकर्ताओं के लिए संभव नहीं है और वे ऐसा कुछ करें भी तो लोग उनसे बात करने को राजी नहीं होंगे। बीजेपी की ये रैलियां 'चुनावी' भले न हों, पर इनके जरिये उसने बता दिया है कि इस तरीके से वह काफी सारे मतदाताओं के पास पहुंच सकती है, जो बाकी दलों के लिए धन और संसाधन, दोनों ही दृष्टियों से लगभग असंभव है।

जाहिर है, ऐसे में चुनाव हुए तो सभी के लिए समान अवसर, या 'लेवल प्लेइंग फील्ड' वाली बात हवा–हवाई बनकर रह जाएगी। संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र में न तो चुनाव टालने की वकालत की जा सकती है, न समान अवसर सुनिश्चित किए बगैर चुनाव कराने की। ऐसे में चुनाव आयोग की जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है।

स्पष्टता का क्षण

अशोक वोहरा।

बुद्ध ने धर्म का अनुसरण करने के इच्छुक लोगों के लिए पांच दिशानिर्देश निर्धारित किये। ये थे– हिंसा, असत्य, यौन दुराचार, चोरी और नशे से बचना। हालांकि सभी पांचों दिशानिर्देश शांत और खुशहाल जिंदगी के लिए अनिवार्य हैं, यहाँ नशे के कैसे और क्यों को जाँचेंगे। आधुनिक समय में, जब तनाव अधिक है तब शराब के एक गिलास से 'थकान दूर करने' की इच्छा अधिक ताकतवर होती है। इसमें कुछ गलत नहीं है, भले ही तनाव दूर करने के लिए मदिरापान उचित तरीका नहीं है। हालांकि, जिस चीज के विरुद्ध बुद्ध ने आगाह किया था यदि आप उसके बारे में होशियार हो जाते हैं, तो आप इन अनुभवों का ज्यादा अच्छी तरह आनंद ले पायेंगे।

संपादकीय

फैसले पर अफसोस

खेत में सूख रहे गन्ने की सिंचाई के लिए बेहद महंगा डीजल लेकर लौट रहे मिल्कीपुर (फैजाबाद) के पास देवी का पुरवा गांव के देवीप्रसाद भिवंडी (मुंबई) से अपनी कॉटन मिल में काम कर रहे गोरखपुर, आजमगढ़ और सुल्तानपुर के छह और साथियों के साथ एक ट्रक वाले को मुंहमांगा किराया देकर तीन दिन लंबे तकलीफदेह सफर के बाद घर पहुंचे, लेकिन अभी अपने इस फैसले पर उन्हें अफसोस है। उनकी वापसी से लेकर अबतक मुंबई में बीमारी बहुत बढ़ गई है, लेकिन उनकी मिल का काम चालू है। देवीप्रसाद का कहना है कि खेती के आसरे रहना वक्त की बर्बादी है। दिन–रात नीलगायों और आवारा पशुओं का डर और उपज कुल मिलाकर इतनी कि पेट चल जाए। अभी ऊपर से टिड्डी का हल्ला और शुरू हो गया है। फैक्ट्री से संदेसा आया है– गाड़ी भेज देंगे, सब एक साथ चले आओ। और ज्यादा पूरब में जाएं तो झारखंड के गिरिडीह और देवघर जिलों में सूरत (गुजरात) से आए कई लोगों को उम्मीद है कि एकाध महीने में हालात संभल जाने चाहिए। इस इलाके में पहली लहर में लोग ज्यादा तकलीफ सहकर घर लौटे लेकिन बीमारी के मामले उनमें नहीं थे। दूसरी लहर में लोग ट्रेन से या गाड़ी करके आए और उनमें से कई कोरोना भी अपने साथ लाए। समय बीतने के साथ जैसे–जैसे बीमारी लंबी खिंचने का खौफ बढ़ रहा है, वैसे–वैसे यह आशंका भी बढ़ रही है कि शहरों में उनके छूटे हुए काम कहीं हमेशा के लिए न छूट जाएं। अभी घर में खाने के लिए चौती का अन्न है और घर–गांव में कम से कम क्वारंटीन का पालन करने वालों के लिए कुछ सहानुभूति भी है। लेकिन बरसात शुरू होने के साथ ही हर तरह की समस्याएं बढ़ेंगी। अच्छा होगा कि तब उनकी उम्मीद का कोटा पूरा पड़े।

यह दिल्ली से पूरे तीस साल बाद अपने गांव लौटा एक परिवार है। कोरोना का कोई ठिकाना नहीं। न जाने कब वापसी हो पाए। हो भी जाए तो पुराना काम हाथ लगे या नहीं। यहां अपनी जमीन बंजर पड़ी थी।

कब वापसी हो पाए

चंद्रभूषण

बागेश्वर (उत्तराखंड) के कांडा कस्बे के पास सिमकूला गांव में कुछ स्त्री–पुरुष तीखी धूप में जरा अटपटे ढंग से अपने सीढ़ीनुमा पहाड़ी खेतों में कुदाल से काम करते दिख रहे हैं। धान की रोपाई के लिए खेत तैयार करने का काम कुदाल से तो नहीं हो सकता। इसके लिए छोटे–बड़े ट्रैक्टरों की जरूरत पड़ती है और कुछ इलाकों में आज भी हल–बैल का इस्तेमाल होता है। इस अटपटेपन का समाधान विडियो में किए गए सवाल–जवाब से होता है। यह दिल्ली से पूरे तीस साल बाद अपने गांव लौटा एक परिवार है। कोरोना का कोई ठिकाना नहीं। न जाने कब वापसी हो पाए। हो भी जाए तो पुराना काम हाथ लगे या नहीं। यहां अपनी जमीन बंजर पड़ी थी। बरसात से पहले खेत तैयार कर लें तो कुछ न कुछ निकल ही आएगा। कुछ समय तक गुजारा चलता रहेगा, फिर आगे की आगे देखी जाएगी। विडियो पर आई टिप्पणियों में दो छोर दिखाई पड़ते हैं। एक इस परिवार की स्थिति पर दयार्द्र होने का– 'यह महामारी जो न करा दे। बताओ, जो लड़के–लड़कियां दिल्ली में ही जन्मे हैं, खेत की शक्ल भी कभी नहीं देखी, उनके ऐसे दुर्दिन कि आज धूप में परती तोड़ रहे हैं, घास बीन रहे हैं!' दूसरा छोर प्रकृतिवादियों का है– 'ठीक ही

तो है। शहर क्या दे रहा था इन्हें। धूल, धुआं, प्रदूषण, कमराबंद जिंदगी और दिन–रात काम की किचकिच। यहां वे प्रकृति के बीच में हैं। अच्छा हवा–पानी और बीमारी का कुछ खास खतरा भी नहीं। सबसे अद्भुत बात यह कि कोरोना का प्रकोप बढ़ने के साथ ही पहाड़ों के निर्जन हो चुके गांव भी आबाद होने लगे हैं। इसे प्रकृति की ओर वापसी क्यों न कहा जाए?' खुद इस परिवार के मन की थाह ले सकें, इतना धीरज न विडियोकार में है न टिप्पणीकारों में।

दिल्ली में पान की दुकान चलाने वाले बीरबल चौरसिया आजकल पूर्वी यूपी के प्रतापगढ़ जिले में स्थित अपने गांव सेतापुर में बिराजे हुए हैं और बता रहे हैं कि उनके यहां तो तकरीबन हर घर बमगोला हुआ पड़ा है। दूर–दूर के शहरों से परिवार हजार तकलीफें झेलकर अपने घर तो पहुंच गए लेकिन इस गर्मी में दोनों टाइम लकड़ी और कंडे वाले चूल्हे पर धुएं के बीच पचास–पचास रोटियां सेंकने को लेकर महिलाओं में भयंकर तनाव है। जीवन इस उम्मीद में कट रहा है कि बाहर से आए लोग कुछ दिन में चले जाएंगे। सबसे बुरा हाल बगल में फकीरों के गांव सरदहा का है, जहां पिछली पीढ़ी का गुजारा झाड़–फूंक से हो गया लेकिन नई पीढ़ी के लोग पास के बाजारों में छोटी–मोटी चीजें बेचते हैं या गांवों में फेरी लगाते हैं।

अभी बाजार लगातार बंद रहने से उनके सामने रोटी का संकट खड़ा हो गया है। महानगरों में रह रहे कुछ संवेदनशील बौद्धिकों को ऐसा लग रहा था कि जो मजदूर शहरों में रातोंरात सड़क पर ला दिए गए, फैक्ट्री वालों ने जिनकी एक महीने की पगार मार ली और मकान मालिक ने एडवांस किराया चुकते ही सामान और बच्चों समेत उन्हें सड़क पर ढकेल कर कमरे पर ताला मार दिया, जो पुलिस की लाठियां खाते हुए सैकड़ों मील पैदल चलने को मजबूर हुए, जिनमें से कई ने रास्ते में भूख–प्यास, लू और दुर्घटनाओं की मार से दम तोड़ दिया, उनका वश चलेगा तो वे गांव में हजार मुसीबतें सहकर गुजारा कर लेंगे, इन निर्दयी शहरों में वापस मजदूरी करने नहीं आएंगे।

सूडोकु नवताल-5380

सरल

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5379 का हल

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1

अपना ब्लॉग

वर्क फ्रॉम होम बना वर्क फॉर होम

मोहन। हमारे एक पड़ोसी है श्रीमान नवरत्न जी। एक प्राइवेट कम्पनी में ऊंचे ओहदे पर कार्यरत हैं। महीने में 20 दिन तो टूर पर ही रहते हैं। कम्पनी ने गाड़ी भी दी हुई है। लोकडाउन से पहले वाले ही दिन घर लौटे थे। जब वो घर पर रहते हैं तब उनका रुतबा किसी बड़ी सियासत के राजा से कम नहीं होता है। सुबह की शुरुआत बेड टी से होती है। फ्रेश होकर आते तो हाथ में उनकी पसंद का टूथपेस्ट और उनका रॉयल टूथब्रश लिए धर्मपत्नी खड़ी मिलती है। जब तक ब्रश आदि करते तब तक बाथरूम में टॉवल, अंडरवियर और बनियान पहुंच जाते हैं। नहाकर वापस आते हैं तो डाइनिंग टेबल पर उनकी पसंदीदा व्यंजन भीनी–भीनी खुशबू महकाते मिलते हैं। जाते समय पत्नी अपने हाथों से टाई बांधती और कोट पहनाकर मुस्कराते चेहरे से विदा करती हैं। साथ में ये कहना कि आप तो यूं आते हो और चले जाते हो। हमारे लिए तो आपके पास टाइम ही नहीं है। इस बार भी ज्यादा दिन लगाए तो मैं आपसे बात नहीं करूंगी।